

श्री परमात्म योवीस तीर्थंकर पूजन

वृषभादिक योवीस जिनेश्वर के नित चरण पजारूँगा
पर द्रव्यो से द्रष्टि हटाकर अपनी ओर निहारूँगा

Thanks & Our Request

This shastra has been kindly donated by Himanshu Parekh, Rajkot, India who provided the material and requested AtmaDharma.com to make this available on the internet.

Our request to you:

- 1) Great care has been taken to ensure this electronic version of [Shree Vartmaan Chovis Tirthankar Pujan \(Gujarati\)](#) is a faithful copy of the paper version. However if you find any errors please inform us on rajesh@AtmaDharma.com so that we can make this beautiful work even more accurate.
- 2) Keep checking the version number of the on-line shastra so that if corrections have been made you can replace your copy with the corrected one.

Version History

Version Number	Date	Changes
001	25 August 2009	First electronic version

શ્રી વર્તમાન ચોવીસ તીર્થંકર પૂજન

રચયિતા :

કવિ રાજમલજી પવૈયા

પ્રકાશક :

આત્માર્થી મુમુક્ષુ પરિવાર

નમ્ર નિવેદન

સમસ્ત મુમુક્ષુ સમાજના આબાલ-ગોપાલ સૌ કોઈ ઘેર બેઠા સંગીતમય પુજાનો લાભ લઈ શકે તે હેતુથી એક આત્માર્થી મુમુક્ષુ પરિવારના ભાવ ઉલ્લસત થતા તેને સી.ડી.માં સાકાર કરી દેશો દેશ પ્રભાવના થઈ શકે અને વીતરાગના ગુણગાન સૌ કોઈ ગાઈ પોતાના આત્માના ગુણોને ખિલવે એવી ઉત્કઠ ભાવના સહ...

પં. શ્રી રાજમલજી પવૈયાના પણ અમો ખૂબ ખૂબ આભારી છીએ.

विनयपाठ (ब्र. रविन्द्रजी)

सकल जन्म मेरा हुआ, प्रभु दर्शन से आज.
भव समुद्र नहीं दीप्ता, पूर्ण होने सब काज .. १ ..
दुर्निवार सब कर्म अरु, मोहादिक परिणाम.
स्वयं दूर मुझसे होने, दैवत तुम्हें ललाम .. २ ..
संवर कर्मों का हुआ, शान्त होने गृह जाल
हुआ सुभी सम्पन्न मैं, नहीं आये मम काल .. ३ ..
भव कारण मिथ्यात्व का, नाशक ज्ञान सुभानु
उदित हुआ मुझमें प्रभो, दीप्ते आप समान .. ४ ..
मेरा आत्मस्वरूप जो, ज्ञान सुभों की पान
आज हुआ प्रत्यक्ष सम, दर्शन से भगवान .. ५ ..
दीन भावना मिट गई, चिन्ता मिटी अशेष
निज प्रभुता पाई प्रभो, रहा न दुःख का लेश .. ६ ..
शरण रहा था प्रोभता, इस संसार मँजार
निज आत्म मुझको शरण, तुमसे सीमा आज .. ७ ..
निज स्वरूप में भगन हो, पाँ शिव अभिराम
इसी हेतु मैं आपको, करता कोटि प्रणाम .. ८ ..
मैं वन्दौं जिनराज को, धर उर समता भाव
तन-धन-जन-जगजाल से, धरि विरागता भाव .. ९ ..
यही भावना है प्रभो, मेरी परिणति माहि
राग-द्वेष की कल्पना, किंचित् उपजै नाहि .. १० ..

विनय पाठ बोलकर सामग्री यद्वाने वाली थाली में शुद्ध यन्त्र द्वारा मंगल स्थापना करें, फिर पूजा पीठिका बोलकर पूजा करें.

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
शमो अरिहंताशं, शमो सिद्धाशं, शमो आयरियाशं,
शमो उवज्जायाशं, शमो लोअे सव्वसाधूशं.
अरिहंतो को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वंदन;
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वंदन.
और लोक के सर्वसाधुओं को है विनय सहित वन्दन;
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को बार बार मेरा वन्दन.
ॐ ह्रीं श्री अनादी मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपेत्;
मंगल यार यार हैं उत्तम यार शरणा में जाऊं मैं ;
मन वच कय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊं मैं.
श्री अरिहंत देव मंगल है, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल;
श्री साधु मुनि मंगल है, है केवलि कथित धर्म मंगल.
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में है उत्तम;
साधु लोक में उत्तम है, है केवलि कथित धर्म उत्तम.
श्री अरिहंत शरणा में जाऊं, सिद्ध शरणा में मैं जाऊं;
साधु शरणा में जाऊं, केवलि कथित धर्मशरणा जाऊं.
ॐ ह्रीं नमो अर्हते स्वाहाः पुष्पांजलि क्षिपेत्.

मंगल विधान

ॐमोकार का मंत्र शाश्वत इसकी महिमा अपरम्पार;
पाप ताप संताप क्लेश उर्ता भवभय नाशक सुखकार. ... १ ..
सर्व अमंगल का उर्ता है सर्वश्रेष्ठ है मंत्र पवित्र;
पाप पुण्य आश्रव का नाशक संवरमय निर्जरा विचित्र. ... २ ..
बन्ध विनाशक मोक्ष प्रकाशक वीतरागपद दाता मित्र;
श्री पंचपरमेष्ठी प्रभु के जलक रहे हैं इसमें चित्र. ... ३ ..
इसके उच्चारण से होता विषय कषायों का परिहार;
इसके उच्चारण से होता अन्तर मन निर्मल अविकार. ... ४ ..
इसके ध्यान मात्र से होता अंतर द्वन्द्वों का प्रतिकार;
इसके ध्यान मात्र से होता बाह्यान्तर आनन्द अपार. ... ५ ..
ॐमोकार है मंत्र श्रेष्ठतम सर्व पाप नाशनहारी;
सर्व मंगलों में पहला मंगल पढते ही सुखकारी. ... ६ ..
यह पवित्र अपवित्र दशा सुस्थिति दुस्थिति में हितकारी;
निमिष मात्र में जपते ही होते विलीन पातक भारी. ... ७ ..
सर्व विघ्न बाधा नाशक है सर्व संकटों का उर्ता;
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी सुख का कर्ता. ... ८ ..
कर्माष्टक का यक मिटाता, मोक्ष लक्ष्मी का दाता;
धर्मयक से सिद्धयक पाता जो ओम् नमः ध्याता. ... ९ ..
ओंम शब्द में गर्भित पाँचो परमेष्ठी निज गुण धारी;
जो भी ध्याते बन जाते परमात्मा पूर्ण ज्ञान धारी. ... १० ..
जय जय जयति पंच परमेष्ठी जय जय ॐमोकार जिन मंत्र;

जय जय जयति पंच परमेष्ठी जय जय षामोकार जिन मंत्र;
भव बंधन से छुटकारे का यही अेक है मंत्र स्वतंत्र. .. ११ ..

ईसकी अनुपम मडिमा का शब्दों से कैसे ढो वर्णन;
जो अनुभव करते हैं वे ही पा लेते हैं मुकित गगन. .. १२ ..
(पुष्पांजलि क्षिपेत)

जल गंधाक्षत पुष्प सुयरु ले दीप धूप इल अर्घ्य धरुं;
जिन गृह में जिन प्रतिमा सन्मुख सहस्त्रनाम को नमन करुं.
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्त्रअष्टनामेभ्यो अर्घ्य नि.

स्वस्ति मंगलपाठ

यौपाद्य

ऋषभदेव कल्याणकराय, अजित जिनेश्वर निर्मल थाय
स्वस्ति करे संभव जिनराय, अभिनंदन के पूजों पाय .. १ ..
स्वस्ति करे श्री सुमति जिनेश, पद्म—प्रभ पद्—पद्म विशेष
श्री सुपार्श्व स्वस्ति के हेतु, यन्द्रप्रभ जन तारन सेतु .. २ ..
पुष्पदंत कल्याण सहाय, शीतल शीतलता प्रकटाय
श्री श्रेयांस स्वस्ति के श्वेत, वासुपूजय शिव साधन हेत .. ३ ..
विमलनाथ पद् विमल कराय, श्री अनंत आनंद जताय
धर्मनाथ शिव शर्म कराय, शांति विश्व में शांति कराय .. ४ ..
कुंथुं और अरजिन सुभरास, शिवभग में मंगलमयआश
मल्लि और मुनिसुप्रत देव, सकल कर्मक्षय कारण अेव .. ५ ..

श्री नमि और नेमि जिनराज, करें सुमंगलमय सभ काज
पार्श्वनाथ तेवीसम ईश, महावीर वंदो जगदीश .. ६ ..
ये सभ यौभीसों महाराज, करें भव्य जन मंगल काज
में आयो पूजन के काज, रामो श्री जिन मेरी लाज .. ७ ..
(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्री वर्तमान योवीस तीर्थकर पूजन

(स्थापना)

भरतक्षेत्र की वर्तमान जिन यौभीसी को करुं नमन;
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर के पद पंकज में वंदन.
भक्ति भाव से नमस्कार कर विनय सहित करता पूजन;
भवसागर से पार करो प्रभु यही प्रार्थना है भगवन.

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त यतुर्विशंति जिन समूह अत्र अवतर
अवतर संवोष्ट ईति आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत यतुर्विशंति जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ः ः
ईति स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त यतुर्विशंति जिन समूह अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट ईति सन्निधिकरणम्
आत्म ज्ञान वैभव के जल से यह भव तृषा बुझाउंगा;
जन्म जरा डर विद्यानंद विन्मय की ज्योति जगाउंगा.
वृषभादिक यौभीस जिनेश्वर के नित यरण पभारूंगा;
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर अपनी ओर निहारूंगा.

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीरांतैभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि. स्वाहा.

આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કે ચન્દન સે ભવતાપ નશાઉંગા;
ભવ બાધા હર ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો સંસારતાપ વિનાશનાય ચન્દનમ્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કે અક્ષત સે અક્ષય પદ પાઉંગા;
ભવ સમુદ્ર તિર ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો અક્ષય પદ પ્રાપ્તયે અક્ષતાન્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કે પુષ્પોં સે મેં કામ નશાઉંગા;
શીલોદધિ પા ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો કામબાણ વિધ્વંસનાય પુષ્પમ્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કે ચરુ લે ક્ષુધા વ્યાધિ હર પાઉંગા;
પૂર્ણ તૃપ્તિ પા ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો ક્ષુધા રોગ વિનાશનાય નૈવેદ્યમ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ દીપક સે ભેદ જ્ઞાન પ્રગટાઉંગા;
મોહ તિમિર હર ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો મોહાન્ધકાર વિનાશનાય દીપમ્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કી નિજ મેં શુચિમય ધૂપ ચઢાઉંગા;
અષ્ટ કર્મ હર ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો અષ્ટ કર્મ વિધ્વંસનાય ધૂપમ્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કે ફલ સે શુદ્ધ મોક્ષ ફલ પાઉંગા.
રાગ દ્વેષ હર ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો મોક્ષ ફલ પ્રાપ્તયે ફલમ્ નિ.
આત્મ જ્ઞાન વૈભવ કા નિર્મલ અર્ધ અપૂર્વ બનાઉંગા;
પા અનર્ધ પદ ચિદાનન્દ ચિન્મય કી જ્યોતિ જગાઉંગા. વૃષ.
ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો અનર્ધ્યપદ પ્રાપ્તયે અર્ધ્યમ નિ.

जयमाला

भव्य द्विगम्बर जिन प्रतिमा नासाग्र दृष्टि निज ध्यानमयी;
जिन दर्शन पूजन अध नाशक भव भव में कल्याणमयी.
वृषभदेव के यरुण पञ्चार्कू मिथ्या तिमिर विनाश करूं;
अजितनाथ पद वन्दन करके पंथ पाप मल नाश करूं.
सम्भवजिन का दर्शन करके सम्यक दर्शन प्राप्त करूं;
अभिनन्दन प्रभु पद अर्थन कर सम्यक् ज्ञान प्रकाश करूं.
सुमति नाथ का सुमिरण करके सम्यक् चारित हृदय धरूं;
श्री पद्म प्रभु का पूजन कर रत्नत्रय का वरुण करूं.
श्री सुपार्श्व की स्तुति करके मोह ममत्व अभाव करूं;
यन्दा प्रभु के यरुण चित्त धर चार कषाय अभाव करूं.
पुष्पदन्त के पद कमलों में वारंवार प्रणाम करूं;
शीतल जिनका सुयशगान कर शाश्वत शीतल धाम वरूं.
प्रभु श्रेयांसनाथ को बन्दू श्रेयस पद की प्राप्ति करूं;
वासुपूज्य के यरुण पूज कर मैं अनादि की आन्ति उरूं.
विमल जिनेश मोक्ष पद दाता पंथ महाप्रत ग्रहण करूं;
श्री अनन्त प्रभु के पद बन्दू पर परिणति का उरुण करूं.
धर्मनाथ पद मस्तक धर कर निज स्वरुप का ध्यान करूं;
शान्तिनाथ की शान्त मूर्ति लज परमशान्त रस पान करूं.
कुन्थुनाथ को नमस्कार कर शुद्ध स्वरुप प्रकाश करूं;
अरुणनाथ प्रभु सर्वदोष हर अष्ट कर्म अरि नाश करूं.
मल्लिनाथ की मलिमा गाँ मोह मल्ल को यूर करूं;
मुनिसुव्रत को नित प्रति ध्याँ दोष अठारह दूर करूं.
नमि जिनेश को नमन करुं मैं निज परिणति में रमण करूं;
नेमिनाथ का नित्य ध्यान धर भाव—शुभाशुभ शमन करूं.

પાશ્વનાથ પ્રભુ કે ચરણામ્બુજ દર્શન કર ભવ ભાર હરું;
મહાવીર કે પથ પર ચલકર મેં ભવ સાગર પાર કરું.
ચૌબીસોં તીર્થકર પ્રભુ કા ભાવ સહિત ગુણગાન કરું;
તુમ સમાન નિજ પદ પાને કો શુધ્ધાતમ કા ધ્યાન કરું.

ૐ હ્રીં શ્રી વૃષભાદિ મહાવીરાંતેભ્યો

અનર્ઘ પદ પ્રાપ્તયે જયમાલા પૂર્ણાર્ધ્યમ નિ. સ્વાહા.

શ્રી ચૌબીસ જિનેશ કે, ચરણ કમલ ઉર ધાર;

મન, વચ, તન જો પૂજતે વે હોતે ભવ પાર.

ઈત્યાશીર્વાદ : જાપ્યમંત્ર – ૐ હ્રીં શ્રી ચતુવિંશતિ તીર્થકરેભ્યો નમઃ

મહા અર્ઘ્ય

મેં દેવ શ્રી અરહંત પૂજું, સિદ્ધ પૂજું ચાવસોં;
આચાર્ય શ્રી ઉવઝાય પૂજું, સાધુ પૂજું ભાવ સોં.
અરિહંત ભાસિત બૈન પૂજું, દ્વાદશાંગ રચે ગની;
પૂજું દિગંબર ગુરૂચરન, શિવ હેત સબ આશા હની.
સર્વજં ભાષિત ધર્મ દશ વિધિ, દયામય પૂજું સદા;
જજિ ભાવના ષોડશ રત્નત્રય, જા વિના શિવ નહી કદા.
ત્રૈલોક્ય કે કૃત્રિમ અકૃત્રિમ, ચૈત્ય ચૈત્યાલય જજું;
પંચમેરૂ નંદીશ્વર જિનાલય, ખચર સુર પૂજિત ભજું.
કૈલાશ શ્રી સમ્મેદગિરિ, ગિરનાર ગિરિ પૂજું સદા;
ચંપાપુરી પાવાપુરી પુનિ, ઓર તીરથ સર્વદા.
ચૌવીસ શ્રી જિનરાજ પૂજું બીસ ક્ષેત્ર વિદેહ કે;
નામાવલી ઈક સહસ વસુ જય, હોય પતિ શિવ ગેહ કે.

(દોહા)

જલ ગંધાક્ષત પુષ્પ ચરૂ, દીપ ધૂપ ફલલાય
સર્વ પૂજ્ય પદ પૂજહું, બહું વિધિ ભક્તિ બઢાય

ॐ ह्रीं ભાવપૂજા, ભાવવંદના, ત્રિકાલપૂજા, ત્રિકાલવંદના કરવી—
કરાવવી—ભાવના ભાવવી, શ્રી અરહંતજી, સિદ્ધજી, આચાર્યજી,
ઉપાધ્યાયજી, સર્વસાધુજી—પંચપરમેષ્ઠિભ્યો નમઃ । શ્રી પ્રથમાનુયોગ—
કરણાનુયોગ—ચરણાનુયોગ—દ્રવ્યાનુયોગેભ્યો નમઃ । શ્રી દર્શનવિશુદ્ધ્યાદિ ષોડશ
કારણોભ્યો નમઃ । ઉત્તમક્ષમાદિ દશલક્ષણધર્મેભ્યો નમઃ । શ્રી
સમ્યગ્દર્શન—સમ્યગ્જ્ઞાન—સમ્યક્ચારિત્રરત્નત્રયેભ્યો નમઃ । જલ વિષે, થલ
વિષે, આકાશ વિષે, ગુફા વિષે, પહાડ વિષે, નગર—નગરી વિષે,
ઊર્ધ્વલોક—મધ્યલોક—પાતાલલોક વિષે બિરાજમાન કૃત્રિમ અકૃત્રિમ
જિન—ચૈત્યાલય જિન—બિંબેભ્યો નમઃ । વિદેહક્ષેત્રસ્થિત વિદ્યમાન વીસ
તીર્થકરેભ્યો નમઃ । પાંચ ભરત, પાંચ એરાવત—દસ ક્ષેત્ર સંબંધી ત્રીસ
ચોવીસીના સાતસો વીસ તીર્થકરેભ્યો નમઃ । પંચમેરુસંબંધી અસ્સીજિન
ચૈત્યાલેયોભ્યો નમઃ । નંદીશ્વરદ્વીપસંબંધી બાવન જિનચૈત્યાલયેભ્યો નમઃ ।
શ્રી સમ્મેદશિખર, કેલાસગિર, ચંપાપુર, પાવાપુર, ગિરનાર, આદિ
સિદ્ધક્ષેત્રેભ્યો નમઃ । પાવાગઢ, તુંગીગિરી, ગજપંથ, મુક્તાગિર, સિદ્ધવરકૂટ,
ઉન બડવાની, પાવાગિર, કુંડલપુર, સોનાગિર, રાજ ગૃહી, મંદારગિરી,
દ્રોણગિરી, અહારજી આદિ સમસ્ત સિદ્ધક્ષેત્રેભ્યો નમઃ । જૈનબિદ્રી, મૂલબદ્રી,
મકસી, અયોધ્યા, કમ્પિલાપુરી આદિ અતિશય ક્ષેત્રેભ્યો નમઃ । સમસ્ત
તીર્થકર, પંચકલ્યાણતીર્થ ક્ષેત્રેભ્યો નમઃ । શ્રી ગૌતમ સ્વામી કુંદાકુંદાચાર્ય
એવં ચારણ ઋદ્ધિધારી સાત પરમ ઋષિભ્યો નમઃ । ઈતિ ઉપર્યુક્તેભ્યોઃ સર્વેભ્યો
અનર્ધ્યપદ પ્રાપ્તયે મહાઅર્ધ્ય નિર્વપામીતિ સ્વાહા ।



शांतिपाठ (ब्र. रविन्द्रशु)

हूँ शांतिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगें;
अनुभूति हो आनंदमय, सारी विकलता तब भगें. १
निज भाव ही है एक आश्रय, शांतिदाता सुखमयी;
भूल स्व दर-दर भटकते, शांति कब किसने लही. २
निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ;
मोह की यद्दान दूटी, शांति निर्जर बह रहा. ३
यह शांतिधारा हो अभांडित, चिर काल तक बहती रहे;
होवे निमग्न सुभव्यजन, सुख शांति सब पाते रहें ४
पूजोपरान्त प्रभो यही, एक भावना है हो रही;
लीन निज में ही रहूं, प्रभो और कुछ वांछा नहीं. ५
दोहा : सज्ज परम आनंदमय निज ज्ञायक अविकार;
स्व में लीन परिणति विषें बहती समरसधार.

धृति पुष्पांजली क्षिपेत्



क्षमापना (विसर्जन)

जो भी भूल हूँ प्रभु मुझ से उसकी क्षमा याचना है.
द्रव्य भाव की भूल न हो अब ऐसी सदा कामना है .. १ ..
तुम प्रसाद से परम सौम्य हो ऐसी विनय भावना है.
जिन गुण सम्पत्ति का स्वामी हो जहाँ यही साधना है .. २ ..
शुद्धात्म का आश्रय लेकर तुम समान प्रभु बन जाँ.
सिद्ध स्वपद पाकर हो स्वामी फिर न लौट भव में आँ .. ३ ..
ज्ञान हीन हूँ किया हीन हूँ द्रव्य हीन हूँ है जिनदेव.

ભાવ સુમન અર્પિત હૈં હે પ્રભુ પાઉં પરમ શાંતિ સ્વયમેવ .. ૪ ..
પૂજન શાંતિ વિસર્જન કરકે નિજ આતમ કા ધ્યાન ધરું.
જિન પૂજન કા યહ ફલ પાઉં મૈં શાશ્વત કલ્યાણ કરું .. ૫ ..
મંગલં ભગવાન્ વીરો મંગલં ગૌતમો ગણી;
મંગલં કુંદકુંદાર્યો જૈનધર્મોડસ્તુ મંગલમ્ .. ૬ ..
સર્વમંગલ માંગલ્યં, સર્વકલ્યાણકારકં;
પ્રધાનં સર્વધર્માણાં, જૈનં જયતુ શાસનમ્ .. ૭ ..

જિન-સ્તવન

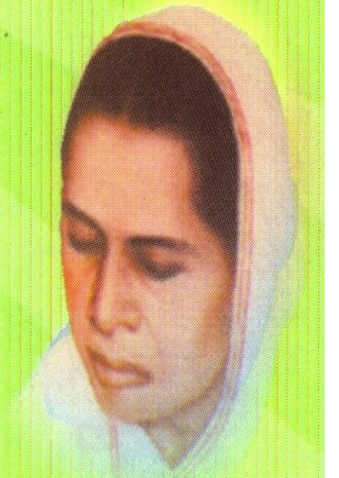
(પ્રદક્ષિણા દેતી વખતે બોલવાનું)

(જિનવર કેરી સુપૂજના-રાગ)

જિનવર દર્શન અદ્ભુત લાગે છે, અદ્ભુત લાગે છે પ્રભુ ધામ કરે,
જિનવર પૂજું આનંદથી...૧
રત્નત્રયીની પ્રાપ્તિ કાજે, દર્શન કરું વીતરાગ રે. જિનવર૦ ૨
જિનવર દર્શનથી હર્ષ ઉભરાય છે, પ્રદક્ષિણા દેવું પ્રભુ દ્વાર રે. ૩
ક્ષીર ઉદયિના ઉજ્જવલ જલથી, ઈંદ્ર કરાવે અભિષેક રે. જિનવર. ૪
હું રે પ્રભુજી પવિત્ર નીરથી, ભાવે કરું અભિષેક રે. જિનવર. ૫
કલ્પવૃક્ષ ને મુક્તાફલથી, ઈન્દ્ર પૂજે જિનરાજ રે. જિનવર. ૬
સેવક તંદુલ બદામ લઈને, ભાવે ચરણ પૂજે આજ રે. જિન૦ ૭
અભિષેક પૂજા ને પ્રદક્ષિણા કરતાં, રોમાંચ ઉલ્લસિત થાય રે. જિન૦ ૮
વીતરાગ ભાવની સ્ફૂરણા થાતાં, જન્મ મરણ દુઃખ જાય રે. જિન૦ ૯
ધન્ય દિવસને ધન્ય ઘડી આજ, જીવન મારું ધન્ય થાય રે. જિન૦ ૧૦

○○○

કવિ પંડિત રાજમલજી પવૈયા
કૃત
શ્રી વર્તમાન ચોવીસ તીર્થકર પૂજન
નિર્માણ: આત્માર્થી મુમુક્ષુ પરિવાર



પ્રાપ્તિસ્થાન: ૧. હિમાંશુ પારેખ, ૩-પંચનાથ પ્લોટ,
રાજકોટ-૧. ફોન: ૨૨૨૩૫૩૦
૨. મનોજ શેઠ, ૫૧૪-આરતી એપાર્ટમેન્ટ કાશીવિશ્વનાથ
પ્લોટ મેઈન રોડ, રાજકોટ-૧. મો: નં ૯૮૨૫૭ ૩૫૮૮૭